VSDlh Mªkboj

çfrHkkxh iqfLrdk

fo"k; lwph

Ø- la	ekWM;wy ,oa ;wfuV	i"B la[;k
1.	ifjp;	**1**
	यूनिट 1.1 – प्रोग्राम के उद्देश्य	**3**
	यूनिट 1.2 – भारतीय ऑटो उद्योग का परिचय	**4**
	यूनिट 1.3 – एक टैक्सी ड्राइवर की भूमिका	**7**
2.	egRoiw.kZ vo/kkj.kk,a vkSj 'kCnkoyh	**13**
	यूनिट 2.1 – रेगुलेटरी फ्रेमवर्क	**15**
	यूनिट 2.2 – क्रेंद्रीय मोटर वाहन नियम–1989	**21**
	यूनिट 2.3 – परिवहन नियंत्रण	**24**
	यूनिट 2.4 – यातायात सिग्नल और नियंत्रण उपकरण	**35**
3.	dLVey :e d lkFk leUo; djuk vkj xkgd fid&vi lokbV ij igpuk **(ASC/N9706)**	**47**
	यूनिट 3.1 – पिक–अप–ड्राप–रिटर्न की प्रक्रिया	**49**
	यूनिट 3.2 – स्मार्ट फोन और कंपनी एप इस्तेमाल करना	**52**
	यूनिट 3.3 – नैवीगेशन और जीपीएस	**54**
	यूनिट 3.4 – वाहन और ड्राइवर की दिखावट	**56**
	यूनिट 3.5 – लॉगबुक	**57**
	यूनिट 3.6 – अंदरूनी निगरानी और मूल्यांकन	**59**
4.	okgu dh jkM onhu l vkduk ,o lfuf'pr djuk **(ASC/N9703)**	**63**
	यूनिट 4.1 – वाहन की सुरक्षा आंकना और सुनिश्चित करना	**65**
	यूनिट 4.2 – वाहन का रखरखाव	**69**
	यूनिट 4.3 – रक्षात्मक ड्राइविंग	**71**
	यूनिट 4.4 – सुरक्षित और होशियार ड्राइविंग करना	**73**
	यूनिट 4.5 – सात स्तरीय निरीक्षण विधि	**83**
	यूनिट 4.6 – ड्राइवर की सीट पर बैठने के बाद की प्रक्रिया	**90**
	यूनिट 4.7 – आपात स्थितियों को संभालना	**91**
5.	LokLF;] lj{kk vkj i;koj.k **(HSE)** dk vH;kl rFkk lj{kk lca/kh fn'kkfun'k **(ASC/N0012)**	**97**
	यूनिट 5.1 – ड्राइवरों का स्वास्थ्य और कल्याण	**99**
	यूनिट 5.2 – बीमा (चिकित्सा, ऑटो, जीवन)	**105**
	यूनिट 5.3 – प्राथमिक चिकित्सा	**108**

6.	xkgd dk vklku ekxl dk mi;kx djr g], lqjf{kr NkMuk vkj mi;Dr 'kYd yuk **(ASC/N9707)**	**111**
	यूनिट 6.1 – ग्राहक सेवा तथा उनकी आवश्यकता	**113**
	यूनिट 6.2 – ग्राहक की अपेक्षाओं को समझना	**116**
	यूनिट 6.3 – ग्राहक का अभिवादन करना	**118**
	यूनिट 6.4 – नर्म व आदरपूर्ण व्यवहार	**120**
	यूनिट 6.5 – ईमानदारी और वफ़ादारी	**122**
	यूनिट 6.6 – सहयोगी और उदार व्यवहार	**124**
	यूनिट 6.7 – समय का प्रबंधन	**126**
	यूनिट 6.8 – ग्राहक सेवा में क्या करें और क्या ना करें	**127**
	यूनिट 6.9 – ट्रिप ट्रैकर सेवा	**129**
	यूनिट 6.10 – किराया लेना और समापन करना	**130**
7.	m|ferk dk'ky	**131**
	यूनिट 7.1 – उद्यमिता का सिद्धांत	**133**
	यूनिट 7.2 – लीडरशिप और टीम वर्क	**136**
	यूनिट 7.3 – नेटवर्किंग	**138**
	यूनिट 7.4 – निजी पूँजी	**140**
8.	cfu;knh vkj lkekU; dk'ky **(ASC/N9703, ASC/N0002, ASC/N 9707, ASC/N0012)**	**145**
	यूनिट 8.1 – योजना बनाना और आयोजन	**147**
	यूनिट 8.2 – निर्णय लेना और समस्या समाधान	**149**
9.	leg e çHkkoh dk;l djuk **(ASC/N0002)**	**151**
	यूनिट 9.1 – ग्राहकों को बेहतर सेवाएं देने के लिए टीम समन्वय	**153**
	यूनिट 9.2 – एक ड्राइवर के रूप में आपकी जिम्मेदारियां	**154**
	यूनिट 9.3 – परिवहन कंपनी	**158**
	यूनिट 9.4 – अभिमुखता और प्रशिक्षण	**159**
	यूनिट 9.5 – कॉलीजन मूल्यांकन	**161**
	यूनिट 9.6 – प्रगतिशील अनुशासन प्रक्रिया	**162**

10.	lokn dkS'ky **(ASC/N9703, ASC/ N 9706, ASC/N9707, ASC/N0012)**	**165**
	यूनिट 10.1 – संवाद कौशल	**167**
11.	Hkk"kkbZ dkS'ky **(ASC/N9703, ASC/N0002, ASC/ N 9706, ASC/N9707)**	**173**
	यूनिट 11.1 – सुनने और बोलने के हुनर	**175**
	यूनिट 11.2 – शारीरिक भाषा (अमौखिक)	**179**
	यूनिट 11.3 – पढ़ने और लिखने का कौशल	**181**
	vuqca/k & ifjo.khZ 'kCn	**184**

AUTOMOTIVE SKILLS DEVELOPMENT COUNCIL

1- ifjp;

;fuV 1-1 & çkxzke dk mÌs';

;fuV 1-2 & Hkkjrh; vkWVks m|ksx dk ifjp;

;fuV 1-3 & ,d VSlh Mªkboj dh Hkwfedk

eq[; f'k{kk

bl eksM~;wy ds lekIr gksus ds ckn] vki%

1. कार्यक्रम के उद्देश्यों को समझना
2. भारतीय ऑटो उद्योग के बारे में चर्चा
3. एक टैक्सी ड्राइवर की भूमिका को समझना

;fuV 1-1% çkxke d mnn';

;fuV d mnn';

bl ;fuV d lekIr gku d ckn] vki%

1. कार्यक्रम के उद्देश्यों को समझ जाऐंगे
2. यह समझेंगे कि एक टैक्सी ड्राइवर कौन होता है

1-1-1 ifjp;

एक टैक्सी ड्राइवर को शोफर, कैब ड्राइवर व कैबी भी कहा जाता है। इन व्यक्तियों का कार्य यात्रियों को शहर में एक स्थान से दूसरे स्थान तक निजी गाड़ियों से पहुंचाना होता है।

ये कार्य करने वाले व्यक्ति को लंबे, अनियमित एवं अप्रत्याशित समय पर गाड़ी चलाने की आवश्यकता होती है।

इन व्यक्तियों में विनम्र और शांति के साथ भरोसेमंद और यातायात की तनावपूर्ण स्थिति एवं ग्राहकों की मांगों के अनुरूप कार्य करने की क्षमता होनी चाहिए।

कार्यक्रम के उद्देश्यः इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में हम निम्नलिखित विषयों को जानेंगे एवं एक टैक्सी ड्राइवर की भूमिका निभाने में सक्षम बनेंगेः

- वाहन की सड़क पात्रता सुनिश्चित करने में।
- कंट्रोल रूम के साथ समन्वय और ग्राहक के द्वारा निश्चित किए गए स्थान से उसे सफर के लिए पिक करने में।
- ग्राहक की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए उसे तेज मार्ग का प्रयोग करके निश्चित समय पर पहुंचाने एवं सुनिश्चित किराय लेने में।
- एक समूह में प्रभावी रूप से कार्य करने में।
- एचएसई एवं सुरक्षा से संबंधित दिशा–निर्देशों का अभ्यास करने में।

vH;kl

1. एक टैक्सी ड्राइवर को संबोधित करने के लिए कौन–कौन से नामों का प्रयोग किया जाता हैं?

____

____

____

____

2. आपके अनुसार इस कार्यक्रम के क्या उद्देश्य हैं?

____

____

____

____

;fuV 1-2% Hkkjrh; vkWVks m|ksx

;fuV ds mn~ns';

bl ;fuV ds lekIr gksus ds ckn] vki%

1. तेज़ी से बढ़ते भारतीय ऑटो उद्योग के विवरण पर चर्चा करना
2. विभिन्न उत्पादों और उनके विकास के कारकों को जानना
3. भारतीय ऑटोमोटिव उद्योग के विकास के बारे में चर्चा करना
4. विकास के मार्ग के आंकड़े जानना

1-2-1 Hkkjrh; vkWVks m|ksx dk ifjp;

दुनिया के सबसे तेज़ी से बढ़ते बाजारों में भारत एक यात्री कार और दूसरा सबसे बड़ा दोपहिया वाहन निर्माता के रूप में बढ़ रहा है। सबसे बड़ी मोटरसाइकिल निर्माता एवं पांचवी सबसे बड़ी वाणिज्यिक वाहन निर्माता भारत में ही है।

भारतीय उद्योग सालाना निम्नलिखित उत्पादन करते हैं:

- 13 लाख यात्री वाहन
- 4 लाख वाणिज्यिक वाहन
- 76 लाख दो पहिया वाहन
- 3 लाख ट्रैक्टर

ऑटोमोबाइल उद्योग ने 33600 करोड़ का कारोबार किया है।

भारत में वाहन कलपुर्जा उद्योग का कारोबार लगभग 10 अरब डॉलर तक पहुंच गया है।

भारतीय टायर उद्योग, जो भारतीय ऑटोमोटिव उद्योग का एक अभिन्न हिस्सा है, उसने लगभग 3 अरब डॉलर का कारोबार दर्ज किया है।

पिछले कुछ वर्षों में भारतीय बाज़ार ने ऑटों कम्पनियों को विश्व स्तर पर आकर्षित किया हैं। इसका कारण भारतीय मध्यम वर्ग का विकास एवं बढ़ती क्रय शक्ति के साथ अर्थव्यवस्था का मज़बूत होना है। भारतीय घरेलू बाजार की ओर झुकाव का कारण बाजार से जुड़ी विनिमय दर और प्रशिक्षित मानव शक्ति की उपलब्धता एवं प्रतिस्पर्धा का होना है।

अमेरिका, यूरोप एवं जापान में आए ऑटो क्षेत्र के ठहराव के कारण भी भारत की ऑटोमोटिव उद्योग क्षमताओं और पूंजी का प्रवाह हुआ है। ऑटो कम्पनियों में बढ़ती प्रतिस्पर्धा से ना सिर्फ कीमतों में कई विकल्प मिल रहे हैं, बल्कि ऑटो उद्योग में लगभग एक साल में 20 फीसदी की उत्पादकता बढ़ी है, जो भारतीय विनिर्माण क्षेत्र में सबसे ज्यादा है।

ऑटोमोटिव (मोटर वाहन) उद्योग, विश्व स्तर एवं भारत में अर्थव्यवस्था के प्रमुख क्षेत्रों में से एक है। अर्थव्यवस्था के कई प्रमुख क्षेत्रों में से एक है। अर्थव्यवस्था के कई प्रमुख क्षेत्रों के साथ अपने गहरे संबंधों के कारण, मोटर वाहन उद्योग में आर्थिक विकास हुआ हैं। भारतीय ऑटोमोटिव उद्योग एक विस्तृत विविधता का उत्पादन करती है, जैसे कि:

- यात्री कार
- हल्के, मध्यम और भारी वाणिज्यिक वाहन
- बहुउपयोगी वाहन जैसे जीप
- स्कूटर

- मोटर–साईकिल
- मोपेड
- तिपहिया वाहन
- ट्रैक्टर
- अन्य कृषि उपकरण

इस क्षेत्र में रोजग़ार उउपलब्ध कराने की उच्च क्षमता है। इससे निर्माण क्षेत्र में रोज़गार की वृद्धि होगी जो मलेशिया (50%), कोरिया (62%) और चीन (31%) की तुलना में भारत केवल 12% है। मोटर वाहन उद्योग में 2016 तक 25 लाख कर्मचारियों की संख्या की आवश्यकता होने की उम्मीद है।

रोज़गार के वर्तमान स्वरूप के आधार पर यह अनुमान लगाया गया है कि मोटर वाहन उद्योग में निम्नलिखित की आवश्यकता हैः

- प्रबंधक / सामान्यः 28% (7.0 लाख)
- कुशल कामगारः 62% (15.5 लाख)
- अकुशल कामगारः 10% (2.5 लाख)

1-2-2 mÙufr ,o fodkl

भारतीय ऑटोमोटिव उद्योग की उत्पत्ति का 1940 के दशक में पता लगाया गया एवं इसका विकास 1970 के दशक में शुरू हुआ। 1970 से 1984 के बीच कारों को एक लग्जरी उत्पाद माना जाता था। कई चरणों में इस बाजार को प्रतिबंधित करने का प्रयास किया गया। चरण इस प्रकार थेः

1. विनिर्माण पर लाइसेंस
2. विस्तार पर प्रतिबंध
3. मात्रात्मक प्रतिबंध के आयात पर टैरिफ
4. बाजार को प्रतिबंधित करने के लिए तैयार संरचना

उस समय में बाजार में 'छः' निर्माताओं का वर्चस्व था, जिनके नाम हैंः

1. टैल्को (अब टाटा मोटर्स)
2. अशोक लेलैंड
3. महिंद्रा एण्ड महिंद्रा
4. हिंदुस्तान मोटर्स
5. प्रीमियर ऑटोमोबाइल
6. बाजाज़ ऑटो

1985 से 1995 के दशक में मारूती उद्योग ने यात्री वर्ग में और जापानी निर्माताओं ने दो पहिया एवं हल्के वाणिज्यिक वाहन वर्ग में प्रवेश किया। यह आर्थिक उदारीकरण का प्रभाव था, जो 1991 में शुरू हुआ। इसी वजह से 1993 में यात्री कार वर्ग में लाइसेंस समाप्त करने का निर्णय किया गया। इसी दशक में दो पहिया वर्ग में हीरो होंडा तथा मारूती उद्योग यात्री गाड़ी वर्ग में प्रमुख खिलाड़ी बनकर उभरे। सन 1995 से 2000 के बीच कई अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों ने बाजार में प्रवेश किया। उन्नत प्रौद्योगिक प्रतिस्पर्धा और पर्यावरण सुरक्षा के दबाव ने अनिवार्यताओं को पूरा करने के लिए कंपनियों को बाध्य किया।

सन् 2000 की शुरूआत में, कुछ नीतियों में परिवर्तन हुआ जैसेः स्वचालित मार्ग के माध्यम से मात्रात्मक प्रतिबंध को हटाना एवं 100 प्रतिशत एफ.डी.आई (थ्क्प) को लागू करना। भारत में निर्मित वाहनों को आंतरिक बाजार में लाया गया एवं निर्यात को रोका गया। 2003 में, मोटर वाहन आर एण्ड डी (ड|त) को स्थापित किया गया जो कि भारत के प्राथमिकता वाले क्षेत्रों की पहचान करने में सहायता करता है।

vH;kl

1. ऑटो उद्योग के किन्हीं भी तीन विकास आँकड़ों की सूची दें।

2. आप भारत में ऑटो उद्योग के विकास के बारे में क्या जानते है?

3. किन वाहनों का भारतीय ऑटोमोटिव उद्योग उत्पादन कर रही है?

4. भारतीय मोटर वाहन बाज़ार की वृद्धि के क्या कारण हैं?

fVIi.kh

;fuV 1-3% ,d VDlh M~kboj dh Hkfedk

;fuV d mnns';

bl ;fuV d lekIr gku d ckn] vki%

1. टैक्सी ड्राइवर की भूमिका को समझना
2. कार्यस्थल के महत्व को समझना

1-3-1 ,d VDlh M~kboj dk dk;LFky ¼VDlh@dc½

टैक्सी कैब जिसे एक टैक्सी या कैब भी कहा जाता है। यह एक ऐसा वाहन है, जो ड्राइवर के साथ किराए पर बुक किया जाता है। अक्सर इसका प्रयोग अकेला व्यक्ति या कुछ लोगों का समूह करता है, ज्यादातर इसे किसी अन्य के साथ शेयर नहीं किया जाता है। यह बात इसे अन्य परिवहन के माध्यमों से अलग बनाती है, जिसमें पिक और ड्रॉप का स्थान सेवाएं देने वाली कम्पनी ही बताती हैं ना कि यात्री।

टैक्सी कैब के भिन्न चार प्रकार हैं, जो देशों के अनुसार अलग–अलग हैं, वह हैं:

- हैक्नी कैरिज जिसे पब्लिक हायर भी कहते हैं। इस अधिकृत सड़क पर खड़े रहकर यात्रियों को इधर से उधर तक ले जाना होता है।
- निजी हायर परिवहन, इसे मिनी कैब या निजी टैक्सी भी कहा जाता है, इसे पहले से बुक करने के लिए लाइसेंस होता है।
- टैक्सी बस, इसे जिटनी के नाम से भी जाना जाता है, इसे पहले से ही निर्धारित रूट पर काफी सारे स्टॉप और स्वतंत्र यात्रियों के साथ चलाया जाता है।
- लिमोजीन, एक विशेष वाहन प्री–बुकिंग वाले लाइसेंस के साथ।

हालांकि वाहनों के प्रकार एवं काम करने के तरीके, भाड़े (रेंट) के तरीके, प्रेषण एवं मोल भाव के तरीके सभी देशों के अलग हैं, परंतु कई आम लक्षण भी हैं।

1-3-2 ukdjh dk fooj.k

टैक्सी ड्राइवर को शैफर, कैब ड्राइवर या कैबी भी कहा जाता है। इन व्यक्तियों का कार्य यात्रियों को शहर में एक स्थान से दूसरे स्थान तक प्राइवेट गाड़ियों से पहुंचाना होता है। यह कार्य करने वाले व्यक्ति को लंबे, अनियमित एवं अप्रत्याशित समय पर गाड़ी चलाने की आवश्यकता होती हैं:

एक टैक्सी ड्राइवर निम्न कार्यों व बातों के लिए जिम्मेदार होता हैं:

- कम्पनी के रखरखाव की योजना को समझना
- मालिक द्वारा अप्रत्याशित निरीक्षण और रखरखाव करना
- कानून द्वारा आवश्यक किसी भी निरीक्षण को अंजाम देना जैसे कि वाहन यात्रा निरीक्षण
- मालिक द्वारा किन्हीं भी आवश्यक दस्तावेजों को पूरा करना और उन दस्तावेजों को लौटाना
- कम्पनी के निवारक रखरखाव योजना में निर्धारित कार्य जैसे की वाहन का निरीक्षण और साथ ही उसे निरीक्षण के लिए उपलब्ध बनाना

- एक प्रवर्तन अधिकारी से प्राप्त किसी भी सड़क पर निरीक्षण की रिपोर्टिंग और कम्पनी के लिए दस्तावेज उपलब्ध कराना।
- निरीक्षण के दौरान पाए गए दोषों के बारे में कम्पनी में सूचित करना।
- एक गड़बड़ी के साथ किसी भी वाहन का संचालन ना करना, जो कि चालक या अन्य किसी व्यक्ति की सुरक्षा को खतरे में डाले

सवारी शुरू करने से पहले, एक टैक्सी ड्राइवर को निम्नलिखित दस्तावेज़ रखने चाहिए:

i. ड्राइविंग लाइसेंस

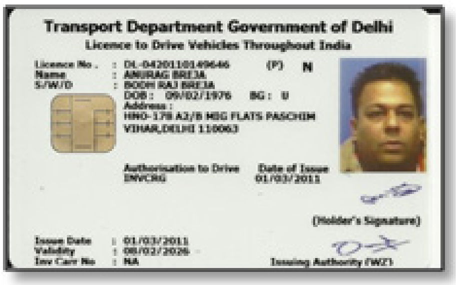

चित्र 1.3.1 ड्राइविंग लाइसेंस

ii. पंजीकरण प्रमाणपत्र

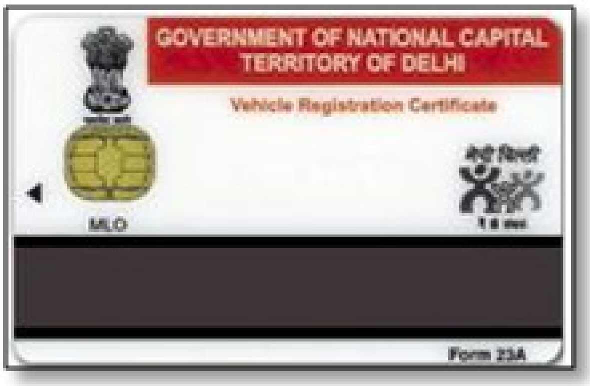

चित्र 1.3.2 पंजीकरण प्रमाणपत्र

iii. बीमा कवर नोट

TWO WHEELER VEHICLE PACKAGE POLICY
Certificate Cum Policy Schedule

चित्र 1.3.3 बीमा कवर नोट

iv. प्रदूषण नियंत्रण प्रमाणपत्र

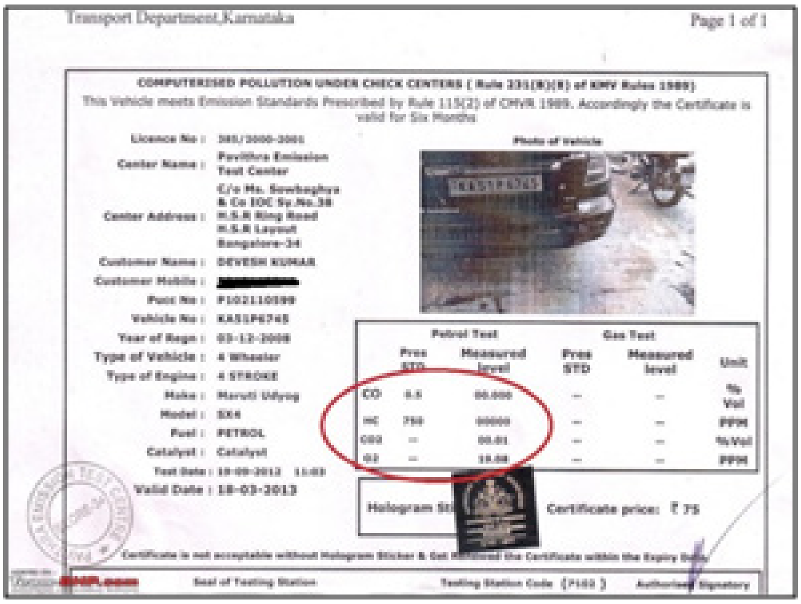
Transport Department,Karnataka

Page 1 of 1

COMPUTERISED POLLUTION UNDER CHECK CENTERS (Rule 231(8)(8) of KMV Rules 1989)

This Vehicle meets Emission Standards Prescribed by Rule 115(2) of CMVR 1989. Accordingly the Certificate is valid for Six Months

Licence No : 385/2000-2001

Center Name : Pavithra Emission Test Center

Center Address : C/o Ms. Sowbaghya & Co IOC Sy.No.38 H.S.R Ring Road H.S.R Layout Bangalore-34

Customer Name : DEVESH KUMAR

Customer Mobile : [redacted]

Pucc No : P102110599

Vehicle No : KA51P6745

Year of Regn : 03-12-2008

Type of Vehicle : 4 Wheeler

Type of Engine : 4 STROKE

Make : Maruti Udyog

Model : SX4

Fuel : PETROL

Catalyst : Catalyst

Test Date : 18-09-2012 11:03

Valid Date : 18-03-2013

Photo of Vehicle

	Petrol Test		Gas Test		
	Pres STD	Measured level	Pres STD	Measured level	Unit
CO	0.5	00.000	—	—	% Vol
HC	750	00000	—	—	PPM
CO2	—	00.01	—	—	%Vol
O2	—	19.08	—	—	PPM

Hologram St[...] Certificate price: ₹ 75

Certificate is not acceptable without Hologram Sticker & Get Renewed the Certificate within the Expiry Date

Seal of Testing Station | Testing Station Code (P102) | Authorised Signatory

चित्र 1.3.4 प्रदूषण नियंत्रण प्रमाणपत्र

एक टैक्सी ड्राइवर वाणिज्यिक वाहनों का सुरक्षित उपयोग एवं उनके संचालन से संबंधित मामलों को संभालने करने में माहिर होना चाहिए।

इस तरह के मुद्दे निम्नलिखित में से कोई भी हो सकते हैं:

- गति सीमा, सीट बेल्ट का उपयोग, नशीली दवाओं और शराब का उपयोग, रक्षात्मक ड्राइविंग, लोड सुरक्षा और ईंधन भरना
- उचित रिकार्ड और आवश्यकता अनुसार जानकारी की रिकार्डिंग, लोडिंग कागज़ात, खतरनाक माल दस्तावेज़, समय रिकार्ड, चालक दैनिक लॉग और वजन पर्चा
- कानून की अनुपाल नीति एवं अनुशासन, चालक प्रशिक्षण जिम्मेदारी, आचरण और संबंधित प्रक्रियाएं
- आवश्यकता के अनुसार सुरक्षा उपकरणों का उपयोग: चिंतनशील त्रिकोण (Reflective Triangles), अग्निशामक (Fire Extinguisher), चश्मे आदि।
- सुरक्षा कानूनों और उनके आवेदन के बारे में कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण एवं उनके ड्राइविंग कौशल का मूल्यांकन करने के लिए कार्यक्रम
- नियमों के अनुसार प्रत्येक ड्राइवर के लिए पूरे रिकार्ड की अवधारणा
- सुनिश्चित करना कि सभी ड्राइवर उपयुक्त वाहनों को सक्षम रूप से संचालित करें

सभी चालकों की यह जिम्मेदारी होती है कि वह कम्पनी की सुरक्षा योजना को जानें एवं उनका पालन करें। इस प्रकार प्रत्येक चालक को निम्नलिखित सुनिश्चित करना चाहिए:

- कम्पनी की सुरक्षा योजना में निर्दिष्ट सूचनाओं का प्रशिक्षण प्राप्त करना एवं अपने कर्तव्यों को ठीक से एवं सुरक्षित रूप से प्रदर्शन करना और जागरूक रहना जैसे: चालकों के सेवा के घंटे, यात्रा निरीक्षण, कार्गो (माल) की सुरक्षा, वजन और आराम आवश्यकताएं आदि।
- वाहन मालिक की नीतियों और प्रक्रियाओं के अनुसार और कानून के दायरे में संचालित किया जाना चाहिए।
- चिकित्सकीय रूप से ड्राइव करने के लिए फिट होना चाहिए। थका हुआ या शराब (ड्रग) के प्रभाव में नहीं होना चाहिए। वाहन संचालन के लिए योग्य हो और सभी आवश्यक दस्तावेज हों जैसे: वैध ऑपरेटर का लाइसेंस, वाहन पंजीकरण, खतरनाक सामान प्रशिक्षण प्रमाणपत्र और बीमा।

- कम्पनी को किसी भी उल्लंघन, प्रतिबद्धता और टकराव की रिपोर्ट करना

एक ड्राइवर को प्रत्येक कैलिंडर दिन के लिए एक दैनिक लॉग पूरा करना होता है या फिर लॉग बुक में टिप्पणी अनुभाग में उनके ऑफ–ड्यूटी होने का संकेत देना चाहिए। जब दैनिक लॉग पूरा करना हो तो निम्नलिखित कार्य करने होते हैं:

- सभी आवश्यक जानकारी दर्ज करें
- कर्तव्य स्थिति के अनुसार दैनिक लॉग बनाएं जैसेः ऑफ–ड्यूटी समय और ड्राइविंग का समय
- सही दैनिक लॉग बनाए
- यात्रा के दौरान प्राप्त किए गए दस्तावेज़ों की प्रतिया बनाएं जैसेः होटल प्राप्ति और ईंधन प्राप्तियां
- दैनिक लॉग और उसे सहायक दस्तावेज़ों को नियोक्ता को देना

dsnh; ekVj okgu vf/kfu;e 1989 d vuqlkj ,d VDlh Mkboj l vif{kr dk'ky

अधिनियम के अनुसार, टैक्सी ड्राइवर में निम्नलिखित कौशल और ज्ञान की आवश्यकता हैः

1. Mkbfoax dk'ky
    - अपने वाहन पर नियंत्रणः ऑटोमोबाइल ईंजन और उनके काम करने का सरल परिचय
    - फुट नियंत्रणः पैर ब्रेक, एक्सीलेटर, क्लच–सप्तऋषि (वर्तमान मॉडल में नहीं है)
    - हाथ नियंत्रणः स्टीयरिंग व्हील, हैंड ब्रेक, हार्न, लाइट, वाइपर, इम्नीशन स्विच, स्टार्टर, डिप्पर और इंडीकेटर।
    - अन्य नियंत्रणः रेयर–व्यू शीशा (मिरर), इन्स्ट्रूमेंट क्लस्टर, गौज, डायल्स, विन्ड स्क्रीन–उनके उद्देश्य
    - ड्राइविंग से पहले जांच, ;पद्ध चालक की सीट पर बैठने से पहले और ;पपद्ध चालक की सीट पर बैठने के बाद
    - ड्राइविंग शुरू करने के दौरानः जाने से पहले और चलने के दौरान की सावधानी, बिटिंग प्वाइंट, स्टीयरिंग कंट्रोल, गियर बदलना, रूकना, एक्सीलेटर (त्वरक) – क्रमिक एवं अचानक, यातायात भावना, सड़क भावना, निर्णय, पार्किंग
    - मेनोईवरसः जुड़े और अलग मेनोईवरस – मेनोईवरस को 3 प्वाइंट, 5 प्वाइंट और यू–टर्न घुमाएं। स्थिर वाहन को ही ओवरटेक करें और गाड़ी को दाएं व बाएं तरफ घुमाएं।
    - गाड़ी को मोड़नाः बैठे रहते हुए गाड़ी को पीछे मोड़ने का गियर डालें और गति को नियंत्रण में रखते हुए गाड़ी को पीछे मोड़े।
    - पार्किंगः समानांतर, कोणीय, सीधा, पार्किंग फेसिंग अपहिल, पार्किंग डाउनहिल आदि आम त्रुटियों का सामना करना होता है।
    - कुछ वाहनों को प्राथमिकता देनाः आपातकालीन वाहन जैसेः आग वाले इंजन और एम्बुलेंस

2. यातायात शिक्षा–।
    - ड्राइविंग विनियमः सड़क का उपयोग करने का विनियम मोटर वाहन धारा के अंतर्गत आता है।
    - अधिनियम, 1988
    - हाथ संकेत
    - यातायात संकेत
    - ट्रैफिक कांस्टेबल के हाथ संकेत/यातायात वार्डन
    - स्वतः प्रकाश संकेतों का परिचय
    - सड़क चिन्हों का परिचय
    - राजमार्गों और शहर की सड़कों पर स्पीड नियम

- आपत्तिजनक स्थानों पर पार्किंग
- मोटर वाहन अधिनियम के कुछ महत्वपूर्ण प्रावधान, 1988–धारा 122, 123, 125, 126 और 128
- मोटर वाहन अधिनियम 1988 की अनुसूची
- केंद्रीय मोटर वाहन नियम, 1989 के उपनियम (3) के अनुसार ड्राइव करने की क्षमता की जांच का प्रशिक्षण

vH;kl

1. एक टैक्सी ड्राइवर की भूमिका क्यों महत्वपूर्ण है?

2. केंद्रीय मोटर वाहन नियम, 1989 के तहत एक टैक्सी ड्राइवर के लिए आवश्यक कौशल की सूची बनाएं।

3. एक टैक्सी ड्राइवर को हमेशा किन दस्तावेज़ों को अपने पास रखना चाहिए?

4. एक टैक्सी ड्राइवर को अपने कार्य की भूमिका के अंतर्गत आने वाले व्यावसायिक वाहन के सुरक्षित उपयोग से संबंधित किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए?

fVIi.kh

;fuV 2-3% ifjogu fu;=.k

;fuV d mnns';

bl ;fuV d lekIr gksu d ckn] vki%

1. टैक्सी को चलाते समय प्रयोग होने वाले हाथों के विभिन्न कार्यों को समझना
2. टैक्सी को चलाते समय प्रयोग होने वाले पैरों के विभिन्न कार्यों को समझना
3. टैक्सी को चलाते समय प्रयोग होने वाले दृश्य नियंत्रण को समझना

2-3-1 ifjp;

एक टैक्सी चालक होने के नाते, आपको वाहन को नियंत्रित करने के बुनियादी नियमों का पता होना चाहिए। यह आपको आत्मविश्वास के साथ गाड़ी चलाने में मदद करता है। आपके कार्य के दिन यदि कोई अनपेक्षित समस्या आती है तो आप उसका सामना करने में सक्षम हो सकते हैं। यदि आपको ये कुछ बातें पता हों तो आप समस्या से ना घबराकर उसको हल करने में सफल हो सकेंगे, वे बाते हैं:

- पैर नियंत्रण
- हाथ नियंत्रण
- दृश्य नियंत्रण

2-3-2 iSj fu;=.k

विशेषतौर पर, सभी मैनुअल ट्रांसमिशन कारों में तीन पैर नियंत्रण होते हैं, वह हैं:

- एक्सेलरेटर
- ब्रेक पेडल
- क्लच पेडल

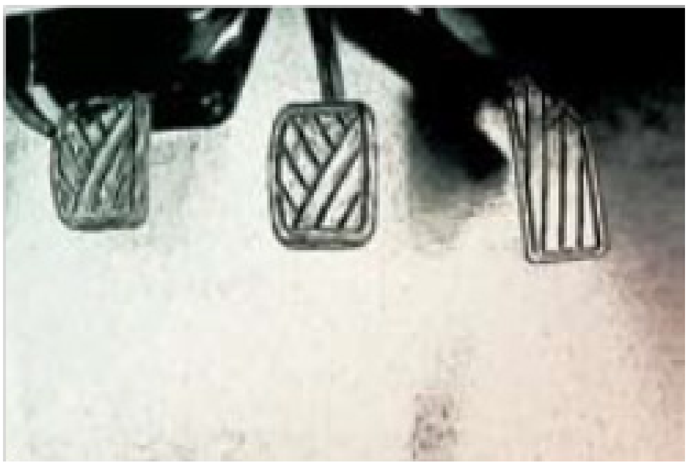

चित्र 2.3.1 पैर नियंत्रण

,DlyjVj

एक्सेलरेटर वाहन की गति को कम और तेज करने का कार्य करता है। इसे नियंत्रित करने के लिए दाहिने पैर का प्रयोग होता है। इसे नीचे की ओर दबाने से ईंजन की गति तेज और ऊपर की ओर छोड़ने से गति कम होती है। एक्सेलरेटर पर नियंत्रण महत्वपूर्ण है, यदि गति ज्यादा दे दी जाए और उस पर नियंत्रण ना हो तो गाड़ी बेकाबू हो सकती है।

इसके मूवमेंट को नियंत्रण करने के लिए कार के फर्श पर अपने पैर को रखें और पंजे के प्रयोग से नियंत्रण करें। एक्सेलरेटर पर आराम से नियंत्रण पाने के लिए आपका गाड़ी या वाहन पर अभ्यास आवश्यक है।

cd iMy

ब्रेक पेडल का प्रयोग गाड़ी की गति को कम करने या उसे एक स्थान पर रोकने के लिए होता है। इसे भी दाहिने पैर से नियंत्रित किया जाता है। जितना आप इसे दबाएंगे उतना ज्यादा ब्रेक लगेगा। यदि इस पेडल का प्रयोग किसी आपात स्थिति में करना हो तो आप अपना पैर एक्सेलरेटर पर से हटा दें और झट से दबाव के साथ इस पेडल पर अपना पैर दाब दें। कभी भी गाड़ी को बंद करने के लिए ईंजन को बंद ना करें ऐसे में ब्रेक कार्य करना बंद कर देंगे।

Dyp iMy

क्लच पेडल का प्रयोग संलग्न या गियर परिवर्तन या गाड़ी को रोकने के लिए भी होता है। यह पेडल बाएं पैर से नियंत्रित होता है। इसके मूवमेंट को नियंत्रण करने के लिए कार के फर्श पर अपने पैर को रखें और पंजे के प्रयोग से नियंत्रण करें।

चित्र 2.3.2 पैर नियंत्रण – ऑटोमेटिक ट्रांसमिशन वाहन

2-3-3 gkFk fu;a=.k

नाम के अनुसार ही इन्हें हाथों के द्वारा संचालित किया जाता हैं, यह हैं:

1. स्टीयरिंग व्हील
2. गियर
3. पार्किंग ब्रेक लीवर
4. हैड लैम्प/पार्किंग लाईट स्विच और फोग लैम्प
5. वाइपर स्विच
6. हॉर्न
7. हाजार्ड लैम्प स्विच
8. टर्न इंडीकेटर्स
9. इग्निशन स्विच
10. डेमीस्टर

आमतौर पर, स्टीयरिंग व्हील को पकड़ने के लिए प्रयोग होने वाले तरीको में दोनों हाथों से पकड़ने वाले तरीके (नीचे दर्शाया गया) का प्रयोग होता है, इसे आप क्वार्टर से थ्री या टेन से टू की स्थिति में अपनी आवश्यकता के अनुसार बदल सकते है। आपसे जितना हो सके, स्टीयरिंग व्हील को अपने दोनों हाथों से पकड़े, हाँ गियर बदलने या थोड़े समय के लिए हाथ को आराम देने के लिए छोड़ सकते है। स्टीयरिंग को अपनी उंगलियों और अंगूठे से कसकर पकड़ें। उंगलियों या एक हाथ से स्टीयरिंग व्हील को पकड़ना खतरनाक होता है और खुद को जोखिम वाली स्थिति में डालने के समान है।

नीचे स्टीयरिंग को पकड़ने के सही और गलत तरीकों को दर्शाया गया है (चित्र 2.3.3)

चित्र 2.3.3 पैर नियंत्रण – ऑटोमेटिक ट्रांसमिशन वाहन

fx;j

एक गियर स्टिक/ गियर लेवर/शिफ्टर एक मेटल की लेयर होती है, जो मैनुअल ट्रांसमिशन ऑटोमोबाइल में लगी होती है और गियर को बदलने में प्रयोग होती है।

गियर स्टिक का प्रयोग आमतौर पर गियर को बदलने के लिए होता है, अपने बाएं पैर से क्लच पेडल को नीचे दबाने व फिर हाथ का प्रयोग करके गियर को बदला जाता है। ऑटोमेटिक ट्रांसमिशन वाहन, सेमी– ऑटोमेटिक ट्रांसमिशन और दोनों में गियर को बदलने के लिए क्लच का प्रयोग नहीं होता है।

आमतौर पर, गाड़ी में 5 गियर होते हैं, इसे 1 से 5 स्तर तक बदला जा सकता है। इसमें साथ ही रिवर्स गियर भी होता है, जो गाड़ी को पीछे करने में सहायता करता है व एक सेंट्रल न्यूट्रल गियर भी होता है। गाड़ी में कुल मिलाकर 7 तरह के गियर होते है। कुछ गाड़ियों में दुर्घटना से बचने के लिए एक विशेष बटन दिया होता है, जो गाड़ी को सामने से आते वाहन या किसी अन्य चीज़ की दिशा से अन्य दिशा में मोड़ देता है। अन्य गाड़ियों में ऐसा मैनुअल करना पड़ता है।

2-3-4 n'; fu;=.k

bLVeVy iuy & इस तरह के इंडीकेटर आपके गाड़ी के वेरियंट और तेल के अनुसार लगे या नहीं भी लगे हो सकते है। अपनी गाड़ी की ऑनर मनुअल को एक बाद अवश्य पढ़ें।

LihMkehVj

यह गाड़ी की वर्तमान गति को किलोमीटर प्रति घंटा में दर्शाता है।

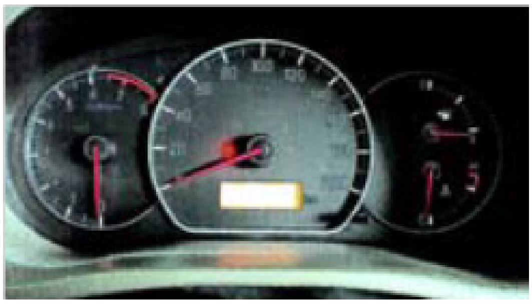

चित्र 2.3.15 स्पीडोमीटर

vkMkehVj

ओडोमीटर गाड़ी की कुल दूरी को दर्शाता है। इससे पता लगता है कि गाड़ी कितनी चली है।

चित्र 2.3.16 ओडोमीटर

Vhi ehVj

ट्रीप मीटर एक ट्रीप पर चली गाड़ी की दूरी को नापता है। इसे नॉब को दबाने से रिसेट या शुरू से चालू भी किया जा सकता है। कुछ गाड़ियों में तीन विभिन्न तरह के ट्रीप मीटर लगे होते हैं।

चित्र 2.3.17 ट्रीप मीटर

VpkehVj

टैचोमीटर ईंजन की गति को आरपीएम (रेवोल्यूशन प्रति मिनट) पर दर्शाता है – यह तेल को बचाने और गति के अनुसार गियर को बदलने में सहायता करता है।

चित्र 2.3.18 टैचोमीटर

¶;y xkt

फ्यूल गॉज टैंक में बचे तेल को दर्शाता है। यह ऐनालॉग या डिजीटल हो सकता है।

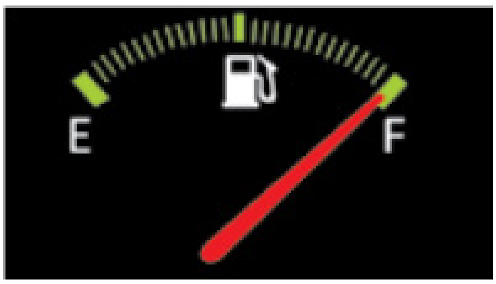

चित्र 2.3.19 फ्यूल गॉज

rkieku xkt

यह ईंजन के कूलेंट के तापमान को दर्शाता है। यदि ईंजन का तापमान अधिक हो जाता है तो मीटर में लगी सुई लिखे एच की तरफ झुक जाती है।

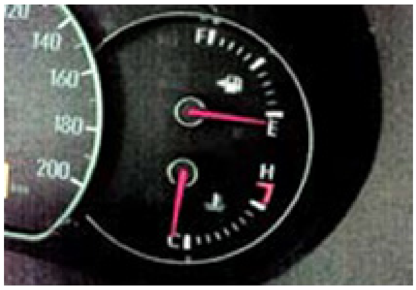

चित्र 2.3.20 तापमान गॉज

vk;y i'kj yEi

ऑयल प्रेशर लैम्प अपर्याप्त ऑयल प्रेशर को दर्शाता है। यदि यह लैम्प ऑन हो तो तुरंत ईंजन को बंद कर दें क्योंकि ऐसा ना करने पर ईंजन सिज यानि जाम हो जाएगा।

चित्र 2.3.21 ऑयल प्रेसर लैम्प

ikfdax cd@cd ¶YkM okfuax yEi

यह लैम्प बताया है कि पार्किंग ब्रेक के फ्लूड का स्तर कितना है। यदि पार्किंग ब्रेक खाली हो तो ब्रेक फ्लूड स्तर की जाँच करें और आवश्यकतानुसार बढ़ाएं।

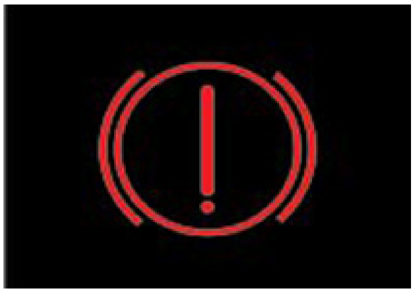

चित्र 2.3.22 पार्किंग ब्रेक/ब्रेक फ्लूड वार्निंग लैम्प

cVh pkftax ykbV

यदि यह लाइट ऑन हो तो समझ जाएें कि चार्जिंग प्रणाली ठीक से कार्य नहीं कर रही है। यह साथ ही फेन बैल्ट के टूटने के भी संकेत हो सकते है। कुछ मामलों में, वाहन चलता रहता है लेकिन गाड़ी को पहले ठीक कराना बेहतर है।

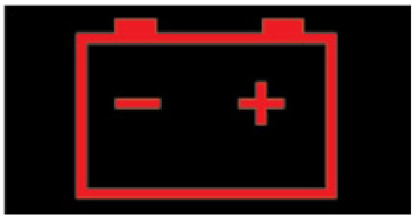

चित्र 2.3.23 बैट्री चार्जिंग लाइट

Vul de gktkM ykbV bMhdVj

यह लाइट तभी जलती है, यदि टर्न सिग्नल या हाजार्ड वार्निंग स्विच ऑन हो।

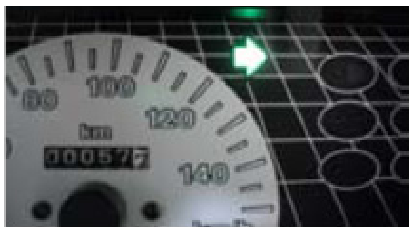

चित्र 2.3.24 टर्न कम हाजार्ड लाइट इंडीकेटर

gkbl che bMhdVj

हाई बीम लैम्प हाई बीम पर लगे हैड लैम्प के जले होने को दर्शाता है। शहरों में स्ट्रीट लाइटिंग वाले क्षेत्रों में इसका प्रयोग नहीं किया जाता है, क्योंकि इससे सामने से आने वाले ड्राइवरों को देखने में दिक्कत होती हैं।

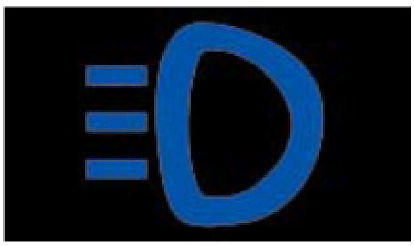

चित्र 2.3.25 हाई बीम इंडीकेटर

okel&vi dkby bMhdVj

यह एक तरह का लैम्प होता है। आपको डीज़ल को क्रेंक नहीं करना चाहिए, जब यह लैम्प प्रयोग में हो।

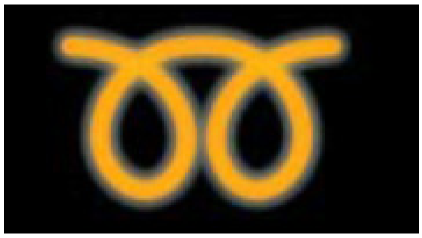

चित्र 2.3.26 वार्म–अप कोइल इंडीकेटर

okVj bu ¶;wy fQYVj

यह फ्यूल में पानी की मात्रा को दर्शाता है। इसे एक अलार्म के रूप में समझे और तुरंत पानी को डालें।

चित्र 2.3.27 वॉटर इन फ्यूल फिल्टर

okgu dk lfoLl djkuk ¼,loh,l ySEi½

जब यह लैम्प जल जाऐं तो वाहन को वर्कशॉप पर दिखाऐं।

चित्र 2.3.28 वाहन को सर्विस कराने का चिंह

ikoj LVh;fjax QkYV bMhdVj

यह फंक्शन पॉवर स्टीयरिंग के सिस्टम में आ रही दिक्कत को दर्शाता है।

चित्र 2.3.29 पॉवर स्टीयरिंग फॉल्ट इंडीकेटर

bZtu ekyQD'ku bMhdVj yEi

यदि यह लैम्प ऑन हों तो ईंजन के सैंसर में दिक्कत होती है। वाहन को वर्कशॉप पर जल्दी से जल्दी लेकर जाऐं।

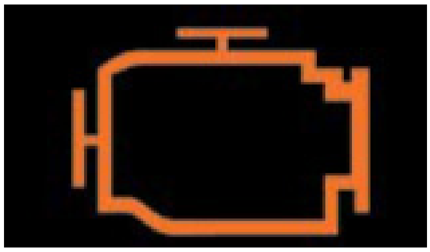

चित्र 2.3.30 ईंजन मालफंक्शन इंडीकेटर लैम्प

,;j cSx QkYV

यदि यह लैम्प बंद ना हो तो समझ जाएं कि एयर बैग में दिक्कत है। वर्कशॉप पर जल्दी से जल्दी लेकर जाएं।

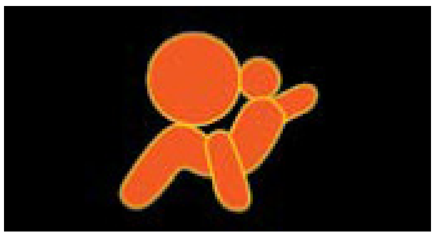

चित्र 2.3.31 एयर बैग फॉल्ट

rk¡xk dh fn'kk

BykxkMh dh fn'kk

jkgxhj fuf"k)

nk;s eqMuk fuf"k) gS

ck;s eqMuk fuf"k) gS

;w&Vuz fuf"k) gS

vkojVsd djuk fuf"k) gS

ikÉdx fuf"k)

Bgjuk ;k [kMk gksuk fuf"k) gS

xfr lhek

pkSMkbZ lhek

ÅapkbZ lhek

yEckbZ lhek

Hkkj lhek

/kqjk Hkkj lhek

vfuok;Z cl LVki

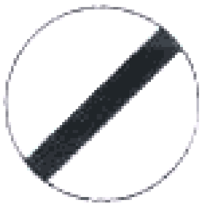
lhek lekIr gksus dk fpgu

vfuok;Z lkbdy Vªd

gkuZ ctkuk vfuok;Z gksus dk fpgu

ck;s cus jguk vfuok;Z gS

ck;s eqMuk vfuok;Z gS

vkxs nk;s eqMuk vfuok;Z gS

lh/kk vkxs tkuk ;k nk;s eqMuk vfuok;Z gS

lh/kk vkxs tkuk ;k ck;s eqMuk vfuok;Z gS

lh/kk vkxs tkuk vfuok;Z gS

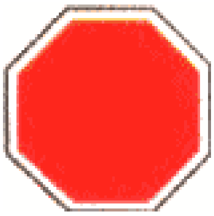
:duk

jkLrk nsa

2. lpsrd fpgu ;k psrkouh ;k ,gfr;krh% ये वह सिग्नल हैं जो आपको कुछ करने के विरुद्ध चेतावनी देते हैं।

lpsrd fpUg

lM+d nk;h vksj eqM+ jgh gS

lM+d ck;h vksj eqM+ jgh gS

nk;h vksj fpeVk eksM+

ck;h vksj fpeVk eksM+

nk;h vksj mYVk eksM+

ck;h vksj mYVk eksM+

[kM+h p<+kbZ

[kM+h <+yku

vkxs ladjh lM+d gS

vkxs lM+d pkSM+h gks jgh gS

ladjk iqy

fQlyunkj lM+d

<+hys dadM+

lkbdy Økfläx

jkgxhj Økfläx

vkxs Ldwy gS

vkneh dke ij yxs gSa

eos'kh

pVªkus fxjrh gSa

?kkV

pkSjkgk

ekxZ/;dk esa Qklyk

cxy dh lM+d nk;h vksj

cxy dh lM+d ck;h vksj

Y-pkSjkgk

Y-pkSjkgk | Y-pkSjkgk | T-pkSjkgk | pDdjnkj pkSjkgk | pDdjnkj pkSjkgk

vkxs cMh lM+d gS | vkxs cMh lM+d gS | xksy pDdj | [krjukd <yku | Vhysnkj ;k dPph lM+d

vkxs vojks/kd gS

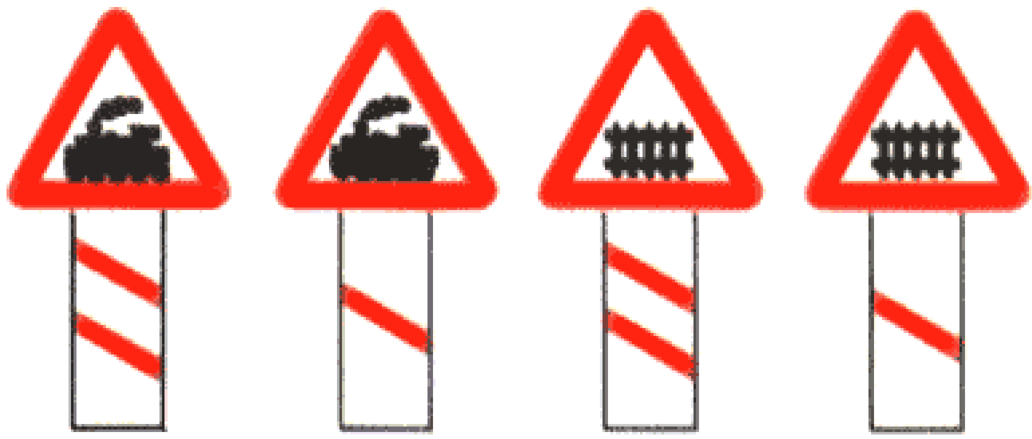

200 ehVj | 50-100 ehVj | 200 ehVj | 50-100 ehVj

3. lwpukÁn fpgu% ये ज्यादार सूचनाप्रद स्वरूप के होते हैं, आपको बताते हैं कि आपसे सड़क पर क्या करने की आशा की जाती है।

lwpukÁn fpUg

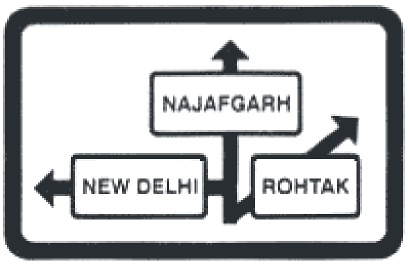

vkxs dh fn'kk dk fpgu

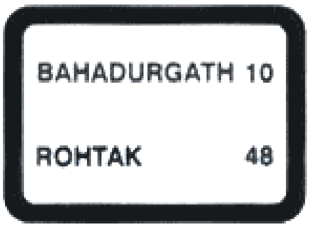

iqu% vk'oklu fpgu

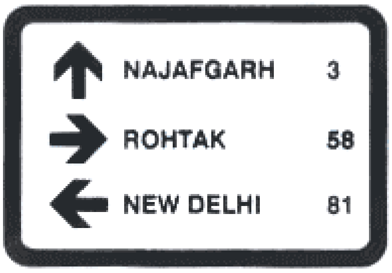

xUr0; dk fpgu

3-1-3 dk;Zky :e dk lkFk leUo;

प्रभावी सेवाएं देने के लिए, काम के दौरान टैक्सी ड्राइवर को सक्षम होना चाहिए कि :

- शेड्यूल के मुताबिक तय समय पर ड्यूटी पर पहुंचे।
- दिन के लिए वाहन को स्टार्ट करने के साथ ही एमसीटी ;डब्ज्द्ध सिस्टम में लॉग–इन करे।
- दिन की जिम्मेदारियों को निपटाने के बाद ड्यूटी समाप्त करने की प्रक्रिया को पूरा करे।
- पिछली यात्रा मुकम्मल करने की जानकारी कंट्रोल रूम को दे।
- एमसीटी के जरिये लगातार कंट्रोल रूम से संपर्क में रहे, ताकि अगली ट्रिप में पैसेंजर को पिक–अप करने की जानकारी गाड़ी में इन्बिल्ट जीपीएस सिस्टम के जरिये डिस्प्ले स्क्रीन पर प्राप्त कर सके।
- निर्धारित स्थान पर पैसेंजर को उतारने की सूचना तुरंत कंट्रोल रूम को दे।

fid&vi ,M Mªki ÁfØ;k Qyk&pkVZ

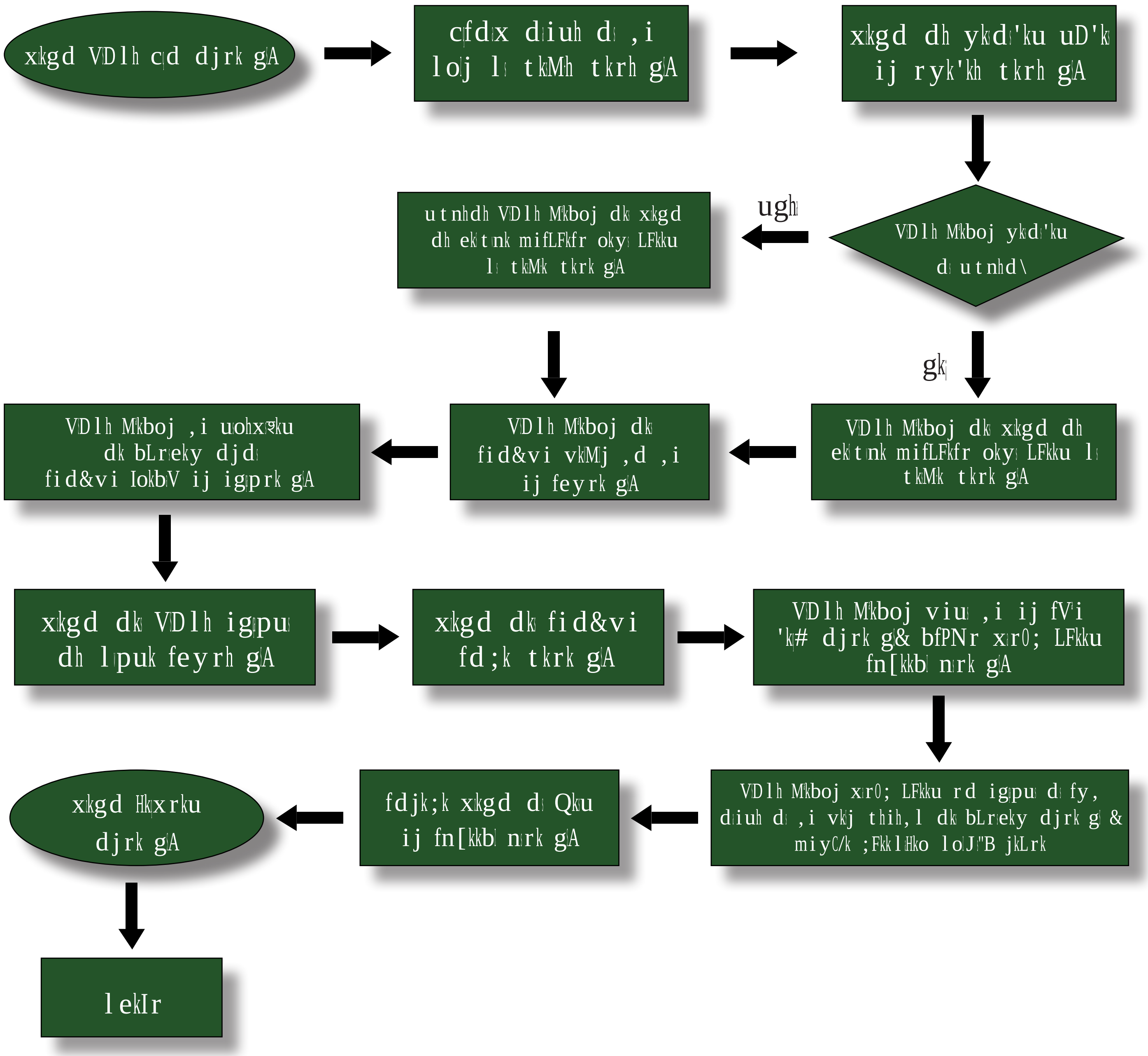

चित्र 3.1.1 पिक–अप एंड ड्रॉप प्रक्रिया फलो–चार्ट

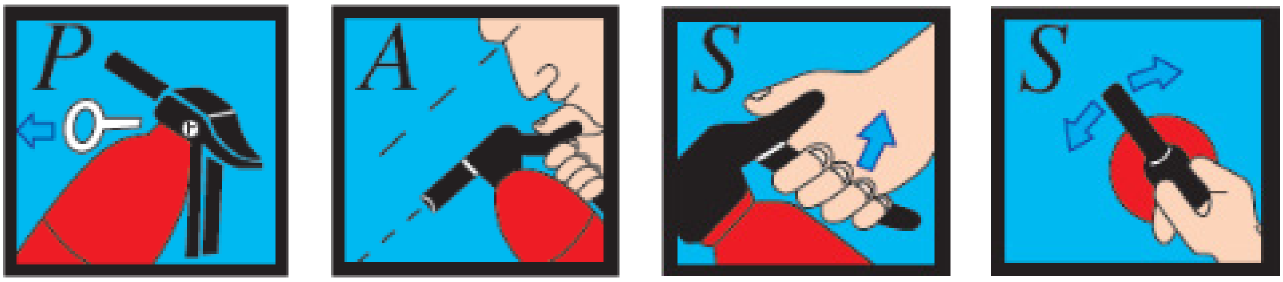

चित्र 4.7.1 अग्निशामक

4-7-3 n|?kVuk

जब आप निम्नलिखित किसी भी स्थिति में हैं तब दुर्घटना घटित हो चुकी हैः–

- सड़क या हाईवे को नुकसान
- तीसरी पार्टी की संपत्ति
- स्वयं की बजाय किसी दूसरे को चोट लगना
- आपने किसी दूसरे वाहन को क्षतिग्रस्त कर दिया या किसी दूसरे वाहन ने आपके वाहन को।

दुर्घटना की अप्रिय घटना मामले में, आप अपने वाहन को तुरंत सड़क के किनारे खड़ा करें। यदि यह दूसरे सड़क उपयोगकर्ताओं के लिए सुरक्षित नहीं है तो हैजर्ड लैंप या चेतावनी तिकोना प्रयोग करें। फोकसशुदा प्रयास के साथ शांत रहें। याद रखें, आप उन यात्रियों के लिए जिम्मेदार हैं, जो आपकी टैक्सी में हैं। उपरोक्त बातें आपको नियंत्रण बनाए रखने में मदद करेंगी और विशेष जानकारी मुहैया करवाने समक्ष बनाएंगें। आपको केवल आपका नाम और पता देने की जरूरत है। दायित्व स्वीकार मत करें। हालांकि, यदि पुलिस द्वारा आप से दुर्घटना के कारणों के बारे में प्रत्यक्ष सवाल पूछे जाते हैं, आप अपने विचारों को इकट्ठा करने के लिए कुछ समय लें ताकि आपको पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जाए कि दरअसल वास्तव में हुआ क्या था।

igyk dke igy & ;fn dkbZ ?kk;y gqvk gS

- प्राथमिक चिकित्सा मुहैया करवाएं
- चिकित्सा सहायता के लिए व्यवस्था करने हेतु 101 नंबर डायल करके एम्बुलेंस को बुलाएं।
- 100 नंबर डायल करके पुलिस को सूचित करें

जहां तक संभव हो, वहां शामिल अन्य लोगों से निम्नलिखित जानकारी प्राप्त करेंरू .

1. मालिक/वाहन ड्राइवर का नाम और पता
2. हुए नुकसानों की एक सूची
3. दुर्घटना से पहले वाहन पर पहले से मौजूद क्षति/खामियां
4. अन्य शामिल पार्टी के साथ ड्राइविंग लाइसेंस नंबर, रजिस्ट्रेशन नंबर, इंश्युरेंस कंपनी, आदि की अदला–बदली करो
5. वाहन का मॉडल
6. टायरों की स्थिति
7. वाहन की गति
8. क्या वाहन सिग्नल दे रहा था?
9. वाहन ड्राइवर या यात्रियों को कोई चोट
10. दुर्घटना स्थल की कुछ तस्वीरें लें, क्लेम के निपटारे में बहुत काम आएंगी।
11. एक सौहार्दपूर्ण समाधान के लिए अन्य पार्टी के साथ सलाह मशविरा करें – किसी भी वाद–विवाद में न पड़ें या मुसीबत में न फंसें
12. यातायात में अवरोध न बनें
13. किसी भी कानूनी जटिलता/आगे की प्रक्रियाओं के लिए अपनी कंपनी की नीतियों का पालन करें

;fuV 9-3% ifjokgu dEiuh

;fuV ds mn~ns';

bl ;fuV ds lekIr gksus ds ckn] vki%

1. परिवाहन कंपनी के लिए अपनी जिम्मेदारियों को समझेंगे
2. परिवाहन कंपनी के साथ अपने संबंध की व्याख्या करेंगे

9-3-1 ifjp;

हर–एक ट्रांसपोर्ट कंपनी को एक सुरक्षा अधिकारी की नियुक्ति करनी चाहिए। उनके नामजद सुरघा अधिकारी को एक ऐसा कार्यक्रम अनिवार्य रूप से बनाना चाहिए जो उनके कारोबार के सुरक्षित संचालन में मदद करे। इन नीतियों और पद्धतियों पर हर समय अमल किया जाना चाहिए। एक सुरक्षा कार्यक्रम को लिखते समय, एक कंपनी उस कार्यक्रम की अपनी विषयवस्तु को निम्नलिखित भागों में बांट सकती है।

कंपनी को ऐसी नीतियां अनिवार्य रूप से बनानी चाहिए जो उसके कर्मचारियों द्वारा रोजाना किए जाने वाले कामों से संबंधित हों। एक साधारण कार्यक्रम, जिसमें कंपनी द्वारा चलाए जा रहे वाहन की किस्म और उपकरण के बारे में जानकारी नहीं है, कर्मचारियों की मदद करने में कारगर सिद्ध नहीं होगा। सुरक्षा कार्यक्रम के इस भाग में वह सारे कानून शामिल होने चाहिए, जिनका पालन करना कंपनी के लिए अनिवार्य है। ट्रांसपोर्ट कंपनियों को ऐसे संभावित जोखिमों या खतरों की पहचान करनी चाहिए जो रोजाना के ट्रांसपोर्ट कार्यों के साथ जुड़े हों। कंपनियां इन नीतियों का विस्तार कर सकती हैं या अपनी जरूरत के अनुरूप अन्य नीतियों को जोड़ सकती हैं। सुरक्षा की नीतियों, पद्धतियों और रीतियों में सतत सुधार एक कारोबार की समग्र सफलता में योगदान कर सकता है।

चित्र 9.3.1 सुरक्षा प्रोग्राम

'kCnkoyh & ifjo.kh 'kCn

एसीएमए ऑटोमोटिव	कम्पोनेंट मैनुफैक्चेरर एसोसिएशन
एआईएससी ऑटोमोटिव	उद्योग मानक समिति
एआरएआई	भारत के ऑटोमोटिव रिसर्च एसोसिएशन
एएसईएएन	दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्र संघ
एएसआई	उद्योग के वार्षिक सर्वेक्षण
एटीआई	मोटर वाहन प्रशिक्षण संस्थान
बाआईएस	भारतीय मानक ब्यूरो
बीएस	भारत स्टेज
सीएजीआर	चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर
सीएआर	मोटर वाहन अनुसंधान एवं विकास पर कोर समूह
सीडीएम	स्वच्छ विकास तंत्र
सीएफएस	कंटेनर फ्रेट स्टेशन
सीएमवीआर	केंद्रीय मोटर वाहन नियम
सीएनजी	संपीड़ित प्राकृतिक गैस
सीओपी	उत्पादन की अनुरूपता
सीएसआईआर	वैज्ञानिक और औघोगिक अनुसंधान परिषद
सीवी	वाणिज्यिक वाहन
डीईपीबी	ड्यूटी एंटाईटलमेंट पासबुक स्किम
डीजी	डीजल जनरेटर
डीजीएफटी	विदेश व्यापार महानिदेशालय
डीएचआई	भारी उद्योग विभाग
एएलवी	वाहन के जीवन का अंत
ईओयू	एक्सपोर्ट ओरियंटिड यूनिट
जीएसटी	गुड्स एंड सर्विस टैक्स
एचपी	हॉर्स पावर
आई एंड सी	निरीक्षण और प्रमाणन
आईसीडी	आंतरिक कंटेनर डिपो
आईसीआरए	भारतीय क्रेडिट रेटिंग एजेंसी
आईएसओ	अंतर्राष्ट्रीय मानकीकरण संगठन
आईटी	सूचना प्रौद्योगिकी
आईटीआई	औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान
एलसीवी	हल्के वाणिज्यिक वाहन
एम एंड एचसीटी	मध्यम और भारी वाणिज्यिक वाहन
एमयूवी	मल्टी यूटिलिटी परिवाहन
एनएआईआई	नेशनल मोटर व्हीकल इंफोट्रॉनिक्स इनिशिएटिव

एनएटीआरआईपी	राष्ट्रीय ऑटोमोटिव परीक्षण और अनुसंधान एवं विकास परियोजना के कार्यान्वयन
एनएचआईए	भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण
एनएचडीपी	राष्ट्रीय राजमार्ग विकास परियोजन
एनआरएसबी	राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा बोर्ड
ओईएम	मूल उपकरण निर्माता
क्यआर	मात्रात्मक प्रतिबंध
आर एंड डी	अनुसंधान एवं विकास
आरएसपीएम	श्रसनीय निलंबित बात कण
एसएपी	विशेष ऑटो कंपोनेंट पार्क
एसईजेड	विशेष आर्थिक क्षेत्र
एसआईएएम	भारतीय ऑटोमोबाइल मैन्यूफैक्चरर्स सोसायटी
एसपीएम	निलंबित बात कण
एसक्यूसी	सांख्यिकी गुणवत्ता नियंत्रण
एसयूवी	स्पोर्ट्स यूटिलिटी वाहन
टीए	अनुमोदन के प्रकार
टीआईएफएसी	सूचना प्रौघोगिकी पूर्वानुमान एवं मूल्यांकन परिषद
टीपीएम	कुल उत्पादकता प्रबंधन
टीक्यूएम	सम्पूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन
टीएमसी	तकनीकी स्थायी समिति
एमसीटी	मोबाइल संचार टर्मिनल का एक उपकरण जो टैक्सी चालकों की पिकप को स्वीकार करने और कंट्रोल रूम को सूचित करने में सहायता करता है।
जीपीएस	ग्लोबल पोजिशनिंग प्रणाली

ikfjHkkf"kd 'kCn

,;j cd ¼lHkh QkmaM'ku cdk d fy, gok½

एयर ब्रेक प्रणाली से युक्त वाहन में ऐसी ब्रेक होती हैं जो एक इंजन कम्प्रेसर द्वारा शुरु किए गए एयर प्रेशर से संचालित होती हैं। वह होज, रिजर्वायर और कंट्रोल वाल्वों की एक श्रृंखला के माध्यम से वाहन की सभी फाउंडेशन ब्रेकों तक एयर प्रेशर को पहुंचाता है।

,;j vkoj gkbMªkfyd cd Á.kkyh ¼,;j vkj gkbMªkfyd QkmaM'ku cd dk dEchu'ku½

हाइड्रोलिक ब्रेकिंग व्यवस्था के उपर हवा वाले वाहनों के एक्सल में हवा द्वारा संचालित बुनियादी ब्रेक होती हैं, जबकि कुछ वाहनों के एक्सल में हाइड्रोलिक बुनियादी ब्रेक्स होती हैं

ok;q pkfyr gkbMªkfyd cd Á.kkyh ¼,;j enn djrh g ykfdu lHkh QkmaM'ku cd gkbMªkfyd gkrh g½

वायु चालित हाइड्रोलिक ब्रेक प्रणाली में वाहन की सभी फाउंडेशन ब्रेकों के हाइड्रोलिक सिस्टम को बढ़ाने के लिए एयर कम्प्रेसर इस्तेमाल किया जाता है।